



## भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा अंतर्राष्ट्रीय जैविक विविधता दिवस-2026 के आयोजन पर रिपोर्ट

### Report on celebration of International Day for Biological Diversity-2026 by ICFRE-HFRI, Shimla.

भा वा अ शि प - हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 22 मई 2026 को “अंतर्राष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस (IDB)” का आयोजन वैश्विक थीम “वैश्विक प्रभाव उत्पन्न करने हेतु स्थानीय स्तर पर कार्य करना” के साथ मनाया। इस अवसर पर जैव विविधता के महत्व तथा स्थानीय स्तर पर इसके संरक्षण की आवश्यकता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक संवादात्मक एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैज्ञानिक-ई, डॉ. रंजना नेगी द्वारा संस्थान के निदेशक, मुख्य वक्ता एवं अन्य प्रतिभागियों के औपचारिक स्वागत संबोधन से हुआ। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस मनाने के महत्व पर प्रकाश डाला तथा वर्ष 2026 की थीम की विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक, डॉ. मनीषा थपलियाल के विशेष संबोधन से हुई। उन्होंने जैवविविधता संरक्षण तथा सतत् विकास को बढ़ावा देने में स्थानीय समुदायों, शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उन्होंने बताया कि स्थानीय स्तर पर किए गए छोटे-छोटे प्रयास—जैसे देशज पौधों की प्रजातियों का संरक्षण, वन आवासों की सुरक्षा तथा सतत् वानिकी को बढ़ावा देना—वैश्विक जैवविविधता लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

उन्होंने भारत में बढ़ते तापमान की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उत्तर प्रदेश का उदाहरण दिया, जहाँ तापमान 48°C तक पहुँच रहा है, जिससे स्थानीय जनजीवन तथा विद्यालय जाने वाले बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने आक्रामक प्रजातियों के उचित प्रलेखन की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में होने वाले किसी भी पारिस्थितिक परिवर्तन का निचले क्षेत्रों पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है, जिससे पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र, नदियों, कृषि तथा मानव बस्तियों के बीच गहरे संबंध स्पष्ट होते हैं। इससे यह संदेश और मजबूत हुआ कि हिमालय में स्थानीय स्तर पर किए गए संरक्षण कार्यों के दूरगामी क्षेत्रीय और वैश्विक परिणाम होते हैं।

पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के वनस्पति विज्ञान विभाग की डॉ. डेज़ी बतीश ने हिमालय में बढ़ते पादप आक्रमणों और घटती पुष्प विविधता पर विशेषज्ञ व्याख्यान दिया। उन्होंने हिमालय में बढ़ते पादप आक्रमण तथा घटती पुष्पीय विविधता विषय पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने आक्रामक प्रजातियों के देशज पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी दी तथा हिमालयी वनस्पतियों के संरक्षण हेतु सामुदायिक भागीदारी, आवास पुनर्स्थापन और वैज्ञानिक निगरानी जैसी सतत् रणनीतियों पर बल दिया।

डॉ. बतीश ने हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के विभिन्न जिलों में पाई जाने वाली आक्रामक (Invasive) पौध प्रजातियों जैसे *Erigeron*, *Bidens pilosa*, *Tagetes minuta*, *Solanum chacoense*, *Delairea odorata* तथा *Broussonetia papyrifera* के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इनके देशज वनस्पतियों, मृदा स्वास्थ्य तथा स्थानीय आजीविका पर प्रभावों को रेखांकित करते हुए कहा कि हिमालय पादप आक्रमण के प्रति अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र है।

उन्होंने *Helianthus* प्रजाति तथा *Vinca major* जैसी खरपतवार प्रजातियों के उपयोग से हस्तशिल्प सामग्री निर्माण की संभावनाओं पर भी चर्चा की। साथ ही बताया कि आक्रामक प्रजातियों में *Asteraceae* कुल का योगदान सर्वाधिक है, जिसके बाद *Lamiaceae* कुल का स्थान है। उन्होंने जैवविविधता संरक्षण के लिए आवास पुनर्स्थापन, सामुदायिक सहभागिता और वैज्ञानिक निगरानी जैसी दीर्घकालिक रणनीतियों की आवश्यकता पर बल दिया।

व्याख्यान के पश्चात चर्चा सत्र आयोजित किया गया। इसमें डॉ. रंजना नेगी ने जम्मू-कश्मीर में *Ageratina adenophora* की वर्तमान स्थिति के संबंध में प्रश्न किया, जिसका उत्तर मुख्य वक्ता ने दिया। निदेशक, डॉ. मनीषा थपलियाल ने *Lantana* खरपतवार के प्रसार की रोकथाम, नियंत्रण और प्रबंधन से संबंधित प्रश्न उठाया। इस पर मुख्य वक्ता ने बताया कि C.R. Babu द्वारा सुझाई गई “कट रूट स्टॉक” पद्धति प्रभावी है, परंतु यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि *Lantana* बुलबुल तथा अन्य फलभक्षी पक्षियों के लिए आवास का कार्य करती है। ऐसी स्थिति में इसका प्रबंधन इको-प्लांटेशन तथा स्थानीय उपयोगी वस्तुओं-जैसे फर्नीचर और खिलौनों के निर्माण द्वारा सतत् उपयोग के माध्यम से किया जा सकता है।

उन्होंने यह भी कहा कि *Lantana* के विकेन्द्रीकृत सामुदायिक उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि इसे स्थानीय स्तर पर ही संसाधित कर मूल्यवर्धित उत्पादों में परिवर्तित किया जा सके, बिना दूरस्थ इकाइयों तक परिवहन किए। इसके अतिरिक्त उन्होंने इसके प्रभावी प्रबंधन हेतु निरंतर निगरानी की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कुछ गैर-सरकारी संगठनों एवं विश्वविद्यालयों द्वारा चीड़ की सूइयों से बायोचार ईंटें बनाने के प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि इसी प्रकार *Lantana* पर भी परीक्षण आधारित उत्पाद विकसित किए जा सकते हैं।

इस कार्यक्रम में लगभग 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. रंजना नेगी ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उन्होंने निदेशक डॉ. मनीषा थपलियाल, मुख्य वक्ता, विस्तार प्रभागाध्यक्ष डॉ. पवन कुमार, वैज्ञानिक-एफ, विस्तार प्रभाग के समस्त कर्मचारियों तथा सभी प्रतिभागियों का इस आयोजन को सफल बनाने हेतु हार्दिक आभार व्यक्त किया।

ICFRE-Himalayan Forest Research Institute, Shimla, celebrated the International Day for Biological Diversity (IDB) on 22<sup>nd</sup> May 2026, embracing the global theme “Act Locally to Create Global Impact”. The day was marked by a series of interactive and informative events aimed at raising awareness about the importance of biodiversity and the urgent need to conserve it at the local level.

The session commenced with a formal welcome address by Dr. Ranjana Negi, Scientist-E, to the Director, ICFRE-HFRI, Shimla, the keynote speaker, and other participants. She highlighted the importance of celebrating International Biodiversity day and elaborated on the theme of the year.

The celebrations began with a special address by Dr. Manisha Thapliyal, Director, ICFRE-HFRI, Shimla emphasizing the critical role of local communities, researchers, and policymakers in protecting biodiversity and promoting sustainable practices. The address highlighted how small, local actions—such as conserving native plant species, protecting forest habitats, and promoting sustainable forestry—can collectively contribute to global biodiversity goals. She highlighted the rising temperatures in India, citing Uttar Pradesh

as an example, where temperatures could soars up to 48 °C, making life difficult for the local population and affecting school-going children. She also stressed the need for proper documentation of invasive species. Furthermore, she pointed out that any ecological changes in high hill regions can have catastrophic effects on downstream areas, underscoring the interconnectedness of mountain ecosystems with rivers, agriculture, and human settlements in lower regions. This reinforced the message that local conservation actions in the Himalayas have far-reaching global and regional consequences. Dr. Daizy Batish, Department of Botany, Punjab University, Chandigarh, delivered the expert talk on rising plant invasions and declining floral diversity in the Himalayas. She elaborated on the environmental impacts of invasive species on native ecosystems and emphasized sustainable strategies for preserving Himalayan flora, including community-based conservation initiatives, habitat restoration, and scientific monitoring. Dr. Batish provided an in-depth overview of invasive plant species such as *Erigeron*, *Bidens pilosa*, *Tagetes minuta*, *Solanum chacoense*, *Delairea odorata*, *Broussonetia papyrifera* in different districts of Himachal Pradesh and Jammu & Kashmir, highlighting their ecological impacts on native vegetation, soil health, and local livelihoods. She said that Himalayas are very sensitive to plant invasion. She also talked about the sustainable management of weeds through eco- plantations and sustainable utilization of weeds such as *Helianthus* sp. and *Vinca major* for the purpose of making handicraft items. She also discussed about the major invasive families where in Asteraceae has contributed the most followed by Laminaceae. She also discussed sustainable strategies for biodiversity preservation, including habitat restoration, community involvement, and scientific monitoring to curb the spread of invasive species.

The talk was followed by discussion session, where in Dr. Ranjana Negi queried about the status of *Ageratina adenophora* in Jammu and Kashmir, the speaker answered her query. Director, ICFRE-HFRI, Shimla also queried about the prevention of spreading, mitigation and management of Lantana weed, wherein she cited the example of cut root stock method by C.R. Babu for removal of Lantana but she also said that it is the home of bulbul and other fruit eating birds also, in such situation how this weed can be managed. The speaker responded that the weed can be effectively managed through eco-plantations and its sustainable utilization in the production of locally useful items such as furniture and toys. She emphasized promoting decentralized, community-based use of the weed so that it can be processed and converted into value-added products locally, without the need for collection and transportation to distant processing units. She also emphasized that constant monitoring is also required for its management. She also mentioned about efforts from few NGOs / Universities who are working on making of biochar bricks out of pine needles, such type of products can be made on trial basis for Lantana too. About 50 people participated in the program.

In the end Dr. Ranjana Negi proposed a formal vote of thanks in which she expressed her gratitude to the Director, ICFRE-HFRI, Dr. Manisha Thapliyal, key note speaker, Head Extension Division, Dr. Pawan Kumar, Scientist-F and staff of extension division and all the participants for making this celebration a success.

कार्यक्रम की झलकियाँ





\*\*\*\*\*